

**कोड- HVL-S301****प्रश्न-पत्र का नाम- वैदिक प्रबन्धन****समय- 3 घण्टे****अधिकतम अंक-70**

**नोट-** प्रश्न-पत्र दो खण्डों ए एवं बी में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड निर्देशानुसार हल करना अनिवार्य है।

**खण्ड ‘ए’****(लघु उत्तरीय प्रश्न)**

**नोट-** किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर 150 शब्दों में दीजिये। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का है।

- प्रश्न 01 कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि। श्लोक की व्याख्या करो।
- प्रश्न 02 नैन छिन्दन्ति शस्त्राणि नैन दहति पावकः। न चैन व्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः। श्लोक की व्याख्या करो।
- प्रश्न 03 ‘यज्ञात्भवति पर्जन्यः’ - गीतोक्त वचन की व्याख्या करो।
- प्रश्न 04 ‘बुद्धिनाशात्प्रणश्यति’ - गीतोक्त वचन की व्याख्या करो।
- प्रश्न 05 गीता में वर्णित स्वप्रबन्धन की कौन- कौन सी विधियाँ हैं, स्पष्ट करो।
- प्रश्न 06 आत्म-प्रबन्धन पर उपनिषदों के अनुसार निबन्ध लिखो।
- प्रश्न 07 यद्यदाचरति श्रेठस्तत्तदेवेतरो जनः। स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते। श्लोक की व्याख्या करो।
- प्रश्न 08 ‘मानसिक स्वास्थ्य प्रबन्धन और श्रीमद्भगवद् गीता’ विषय पर निबन्ध लिखो।
- प्रश्न 09 ‘मानसिक स्वास्थ्य प्रबन्धन और उपनिषद् साहित्य’ विषय पर निबन्ध लिखो।
- प्रश्न 10 श्रीमद्भगवद् गीता के अनुसार त्रिविध नरक के द्वारों की विवेचना करो।

**खण्ड ‘बी’****(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)**

**नोट-** किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर विस्तृत रूप में दीजिये। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है।

- प्रश्न 01 स्थितप्रज्ञ को श्रीमद्भगवद् गीता के अनुसार परिभाषित करते हुए विवेचित करो।
- प्रश्न 02 यज्ञ की महत्ता पर श्रीमद्भगवद् गीता के अनुसार प्रकाश डालो।
- प्रश्न 03 आत्मा की अमरता को सप्रमाण सिद्ध करो।
- प्रश्न 04 श्रीमद्भगवद् गीता में प्रोक्त कर्म सिद्धान्त पर निबन्ध लिखो।
- प्रश्न 05 श्रीमद्भगवद् गीता के अनुसार दैवी सम्पद् की व्याख्या करो।
- प्रश्न 06 श्रीमद्भगवद् गीता के अनुसार आसुरी सम्पद् की सप्रमाण विवेचना करो।
- प्रश्न 07 श्रीमद्भगवद् गीता का अध्याय परक परिचय एवं महत्त्व स्पष्ट करो।
- प्रश्न 08 स्वप्रबन्धन की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उसकी आवश्यकता पर प्रकाश डालो।